पंचम अध्याय

सारांश एवं निष्कर्ष

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय - पंचम

सारांश एवं निष्कर्ष

भूमिका :- 5.1

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता हैं यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में मूल्यों का विकास हो। मूल्य मनुष्य के अर्न्तगत में जगाती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिए प्रेरित है और उसके आचरण को शासित करती है। बच्चों के अंदर मूल्यों का सम्पूर्ण विकास हो इसके लिए शिक्षकों को प्रयास करना होगा। शासकीय स्तर पर चाहे कितना ही मनोहर योजना बना ली जाये किंतु अध्यापक यही उसे ठीक ढ़ंग से कार्यान्वित न करें तो वह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती इसलिए अध्यापकों में चरित्र, स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकात्मता, प्रत्येक कार्य के प्रति सम्मान एवं आरोगय मूल्यों के प्रति अध्ययन करना आवश्यक है।

5.2 **प्रस्तुत अध्ययन** :-

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि महाराष्ट्र राज्य के अमरावती शहर के प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में चरित्र, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकात्मता, श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य यह जनतंत्रात्मक मूल्य कितने है।

5.3 **शीर्षक** :-

''प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्य का अध्ययन''

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

5.4 अध्ययन के उद्देश्य :-

(1) प्रारंभिक शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(2) पुरूष शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(3) स्त्री शिक्षिकाओं में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(4) स्त्री और पुरूष शिक्षकों में में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अंतर ज्ञात करना।

(5) डी.एड. शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(6) बी.एड. शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(7) डी.एड. और बी.एड. शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अंतर ज्ञात करना।

(8) शहरी शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(9) ग्रामीण शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(10) शहरी और ग्रामीण शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अंतर ज्ञात करना।

(11) संयुक्त कुटुम्ब के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(12) विभक्त कुटुम्ब के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

(13) संयुक्त और विभक्त कुटुंब के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अंतर ज्ञात करना।

5.5 परिकल्नाएँ :-

(1) शिक्षक, शिक्षिकाओं में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

(2) डी.एड. और बी.एड. शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

(3) ग्रामीण और शहरी शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

(4) संयुक्त और विभक्त कुटुम्ब शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

5.6 **न्यादर्श** :-

प्रस्तुत अध्ययन में अमरावती शहर के 100 शिक्षकों को प्रारंभिक विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के लिए चयनित किया गया। जिसमें 56 शिक्षकों एवं 44 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया है।

5.7 **उपकरण तथा तकनीक** :-

उपकरण :- एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित जनतंत्रात्मक मूल्य-परीक्षण का उपयोग किया गया।

तकनीक :- उपरोक्त 100 शिक्षकों का जनतंत्रात्मक मूल्यों के अध्ययन के लिए एस.पी. कुलश्रेष्ठ के जनतंत्रात्मक मूल्य परिसूची का प्रयोग किया गया। अंकों की गणना कुंजी (Key) की सहायता से की गई। प्राप्त अंकों का मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन निकालकर ही परीक्षण किया गया।

5.8 **मुख्य परिणाम** :-

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर जो निष्कर्ष सामने आये वे निम्न हैः-

(1) स्त्री और पुरूष के बीच में चरित्र मूल्यों के प्रति अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया। स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय, एकात्मता श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य मूल्यों में स्त्री एवं पुरूष

LIBRARY Bhopal

शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(2) डी.एड. और बी.एड. शिक्षकों के बीच में (चरित्र, स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकता, श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य) मूल्यों में शिक्षकों का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(3) ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच में चरित्र मूल्यों के प्रति अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया। (स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकात्मकता श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य) मूल्यों में शिक्षकों का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(4) संयुक्त कुटुम्ब और विभक्त कुटुम्ब के शिक्षकों के बीच में (चरित्र, स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकतात्मता श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य) मूल्यों में शिक्षकों का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5.10 सुझाव :-

(1) 'डाइट' जैसी संस्थाओं के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

(2) 'शिक्षक' प्रशिक्षणार्थियों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

(3) 'आदिवासी' विद्यालयों के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।